दिनांक ....

E Content for B.A. Hons. Degree I, Paper I
(Bharat ka Itihas – beginning to 1906)
HISTORY.

Prof. Sonam Choudhury
Chief Coordinator,
History, N.O.U.

Q) What were the Achievements of Harshavardhan?

हर्षवर्द्धन की उपलब्धियाँ क्या थीं?

Ans.) निःसंदेह सातवीं सदी के प्रारंभ में भारतीय इतिहास के रंगमंच पर हर्ष का उदय एक महत्वपूर्ण घटना थी। यद्यपि हर्षवर्द्धन में न तो अशोक के जैसा महान् आदर्श था और न चन्द्रगुप्त मौर्य के जैसा युद्ध-कौशल ही, फिर भी वह गुप्त सम्राटों की खोई हुई सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने में सफल हुआ। इसलिए इतिहासकारों ने इसकी तुलना चन्द्रगुप्त एवं अन्य गुप्त शासकों से की है। सचमुच हर्ष ने विकेन्द्रीकरण के इस युग में उत्तरी एवं दक्षिणी भारत को एकता के सूत्र में बाँधा था। जिस युग में उत्तरी भारत विक्षेपित हो रहा था और दक्षिणी भारत का नामोनिशान मिट रहा था ऐसी स्थिति में स्थापित किया गया साम्राज्य निश्चय ही शासक की अमूल्य निधि कहा जायेगा और हर्ष भी मूलतः इन्हीं कारणों से प्राचीन भारत में अंतिम प्रतापी हिन्दू शासक के रूप में जाना जाता है।

हर्ष के उपलब्धियों की जानकारी के मुख्य स्रोत उसके दरबारी बाण की हर्षचरित एवं ह्वेनसांग

Scanned with CamScanner

का विवरण है। किन्तु हर्ष के साथ घनिष्ठ संबंध होने के कारण उसके वर्णन अतिरंजित हैं। हर्षकालीन अभिलेखों में उसके संदर्भ में हमें जानकारी मिलती है। उसने स्वयं कुछ पुस्तकें लिखी जो उसके राज्य काल की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं।

हर्ष की विजय एवं साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से उसकी महानता के संदर्भ में R.C. Majumdar एवं Nihar Ranjan ने विरोधी मत प्रस्तुत किए हैं। डा० राय हर्ष की महानता का अतिरंजित करते हैं तो दूसरी ओर डा० मजुमदार हर्ष की उपलब्धियों को कम करना चाहते हैं। हर्ष के संबंध में R.S. Tripathi का मत ही सर्वाधिक मान्य प्रतीत होता है।

सिंहासनारूढ़ और समस्या - हर्ष ने सोलह वर्ष की आयु में थानेश्वर की गद्दी सम्भाली जब राज्य की सबसे नाजुक अवस्था थी। थानेश्वर इस समय एक ओर हूण के आक्रमण से तथा दूसरी ओर मालवा और गौड़ शासकों के षड्यंत्र से घिरा था। बहुत दिन नहीं बीते थे कि हर्ष को उसके बड़े भाई राज्यवर्द्धन का सहयोग खोना पड़ा। किन्तु हर्ष ने इन कठिनाइयों का धैर्यपूर्वक मुकाबला किया। यद्यपि वह अपने रण अभियान में सम्राट गुप्त का समकक्ष नहीं हो सका और शत्रु शशांक तथा पुलकेशिन द्वितीय उसके विपरीत न हो सके

Scanned with CamScanner

तथापि उसने थानेश्वर में अपनी राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ कर ली थी। किसी भी तत्कालीन शासक को यह साहस न हुआ कि उसे रणक्षेत्र में चुनौती दे सके। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में उसने थानेश्वर को उत्तर भारत का सबसे महान् राज्य बना दिया।

विजय अभियान — हर्ष ने पैतृक संपत्ति दिल्ली थानेश्वर और पंजाब के दक्षिण पूर्वी क्षेत्र को प्राप्त किया था। अपने विजय अभियान के द्वारा अपने क्षेत्र की रचनात्मक कार्यों, कार्यों विस्तृत कर लिया। उसने अपने 41 वर्ष के शासनकाल में पंजाब, कश्मीर, नेपाल तथा वलभी जैसे सुदूरवर्ती राज्यों को भी अपने अधीन ले आया। इन राज्यों के विजय के संबंध में विद्वानों का कहना है कि यद्यपि हर्षवर्धन ने इन राज्यों पर विजय प्राप्त की किन्तु इसे अपने राज्य का अंग नहीं बना सका। यद्यपि राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, आदि राज्यों के विजय में प्रायः सभी ने प्रत्यक्ष आधिपत्य को स्वीकार किया है। वह दक्षिण में अपनी सत्ता का विस्तार नहीं कर सका क्योंकि उसे पुलकेशिन द्वितीय द्वारा भारी पराजय का सामना करना पड़ा था। इस तरह विजय अभियान द्वारा भारतीय राजनैतिक एकता का एक सूत्र में बांधने का हर्ष ने बहुत हद तक प्रयास किया था।

राज्य की सीमा और क्षेत्र — हर्ष का विजय अभियान किस सीमा तक भारत को प्रभावित किया, इस संबंध में विद्वानों में मतभेद है। एक और पणिक्कर और

और विहार रंजन जैसे विद्वान हर्ष का क्षेत्र सम्पूर्ण मध्य प्रदेश तथा उत्तरी भारत मानते हैं, वहीं दूसरी ओर फ्रांसीसी विद्वान ऐतिहासिक नेपाल को हर्ष के साम्राज्य का अंग नहीं मानते हैं और कश्मीर तथा वल्लभी को भी उसके आंशिक प्रभाव के रूप में ही स्वीकार करते हैं। हर्ष के संबंध में "सुकलोतारापथनाथ" शब्द के प्रयोग से इसके साम्राज्य के विस्तार के संबंध में भारी मतभेद हो गया है। इसके आधार पर कुछ विद्वानों ने माना है कि हर्ष के राज्य में समस्त उत्तरी भारत सम्मिलित था किन्तु Dr. R. C. Tripathi, R. C. Majumdar इस बात से सहमत नहीं है। ह्वेनसांग के वृतांत से स्पष्ट होता है कि उस समय कपिलस, कश्मीर, जालंधर, पंजाब, मथुरा, मतीपुर, ग्वालियर, सुवर्णगोत्र, कपिलवस्तु, नेपाल, कामरूप, महाराष्ट्र, भड़ौच, वल्लभी, गुर्जर देश, उज्जैन, बुन्देलखण्ड और सिंध स्वतंत्र राज्य थे। यदि उतरापथ से इस राज्य को निकाल दें तो भी मानना पड़ेगा की हर्ष के साम्राज्य में पूर्वी पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा सम्मिलित थे।

प्रशासन - हर्ष एक महान विजेता अथवा साम्राज्य निर्माता ही नहीं बल्कि एक कुशल शासक एवं योग्य संगठनकर्त्ता भी था। अपने निरंतर युद्धों में व्यस्त रहने के कारण मौर्य प्रशासन से अलग हर्ष अपनी शासन व्यवस्था का आधार गुप्त शासनप्रणाली को ही रखा। वह भी कुछ अंगों में भिन्न था। उसका शासन मूलतः विकेन्द्रीकरण और सामंतशाही पर आधारित था। हर्ष समस्त शासन का प्रधान नेता था और राज्य की कार्यपालिका,

विधायिका और न्यायपालिका संबंधी शक्ति उसके हाथ में केंद्रित रहती थी।

प्रशासनिक कार्य — ह्वेनसांग के अनुसार वह प्रशासनिक कार्यों से कभी नहीं थकता था और सुख-प्यास भूल जाता था। उसने अपने दैनिक कार्यक्रम को तीन भागों में बाँटा — दो भाग धार्मिक कार्य के लिए तथा एक भाग प्रशासन की देख रेख के लिए। हर्ष स्वयं घूम-घूमकर निरीक्षण करता था और जनता की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता था, लेकिन प्रशासनिक कार्यों के मूल्यांकन के दृष्टिकोण से हर्ष का यह कार्य कोई नई उपलब्धि नहीं थी, क्योंकि इससे पहले भी अशोक एवं उनके जैसे अन्य भारतीय राजाओं द्वारा ऐसा निरीक्षण किया जा सकता था।

पदाधिकारी — ह्वेनसांग के विवरणों के अनुसार राज्य के पदाधिकारियों का शासन में महत्वपूर्ण हाथ था। स्पष्ट है कि राज्य की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद भी थी। संपूर्ण साम्राज्य प्रांतों जिलों और ग्रामों में विभक्त थे। शासन के इन अंगों को संभालने के लिए महासामंत, महाराज-धीश सीमा शंकर, न्यायधीश आदि थे। जिले के अधिकारियों की सहायता के लिए दण्डिक, दण्डपाशिक आदि कर्मचारी होते थे।

ग्राम — प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी जिसका प्रधान मुखिया होता था। इसका मुख्य काम ग्रामों में शांति रखना, राजस्व की वसूली करना तथा अन्य स्थानीय आवश्यकताओं को पूर्ति करना था।

Scanned with CamScanner

पत्रांक ..... दिनांक .....

न्याय व्यवस्था — हर्ष के समय न्याय-व्यवस्था बहुत कठोर थी। राजद्रोह के लिए आजीवन कारावास और असामाजिक तत्वों को अंग भंग कर दिया जाता था। साम्राज्य में कानून की व्यवस्था का प्रबंध बहुत अच्छा नहीं था। स्वयं ह्वेनसांग को जल एवं स्थल दोनों मार्ग पर लुटेरों का सामना करना पड़ा था। इससे प्रशासनिक कमजोरी का पता चलता है।

राज्य-कर — राज्य की आय का मुख्य साधन भूमि अथवा लगान था जो पैदावार का 1/6 भाग होता था। जो द्रव्य और अनाज के रूप में कर नहीं दे पाता तो शारीरिक श्रम करके उसका निश्चित कीमत चुकाना पड़ता था। इसके अतिरिक्त भेंट और उपहार से भी राज्य की आय होती थी। व्यापारिक माल पर चुंगी आय का अन्य साधन था। हर्ष के संबंध में यह भी उल्लेख मिलता है कि यह राष्ट्रीय आय को चार भागों में विभाजित किए हुए था, जिसमें एक भाग सरकारी व्यय के लिए, दूसरा सार्वजनिक सेवाओं के वेतन, तीसरा बुद्धिजीवियों के पुरस्कार वगैरह के लिए, चौथा दान के लिए। साम्राज्य की समृद्धि को देखते हुए यही कहा जा सकता है, भले ही राष्ट्रीय आय का यह विभाजन विचार के धरातल पर आदर्श रहा हो, परंतु व्यवहार में अवश्य ही अव्यवहारिक रहा होगा।

धार्मिक नीति — अपने राष्ट्र को धर्मनिरपेक्षता का जामा पहनाने के लिए वह सभी धर्मों के प्रति समान श्रद्धा रखता था, लेकिन सत्य तो यह है कि उसका व्यक्तिगत झुकाव बौद्ध धर्म के महायान शाखा के प्रति था। तभी तो उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए कन्नौज सभा का आयोजन किया गया था।

Scanned with CamScanner

हालांकि अन्य धर्मों के प्रति उसकी सहिष्णुता कम नहीं थी। अगर नहीं होती तो प्रयाग सभा में ब्राह्मणों एवं अन्य धर्मावलम्बियों को दान नहीं देता। उसकी उदारता की पराकाष्ठा इस बात से परिलक्षित होती है कि वह वस्त्रों तक भी दान ~~था~~ कर देते थे।

शिक्षा के प्रचार – हर्ष साम्राज्य में शिक्षा के प्रचार के लिए राज्य की ओर से प्रचुर मात्रा में संपत्ति और सुविधाएँ दी जाती थी। हर्ष की साहित्यिक योग्यता का परिचय उन्हीं के द्वारा रचित ग्रन्थ नागानन्द, रत्नावली और प्रियदर्शिका आदि से मिलता है। राजकवि बाणभट्ट ने अपने प्रसिद्ध हर्षचरित में संस्कृत ग्रन्थ का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया था। अतः इस काल में संस्कृत कविता एवं गद्य को काफी प्रोत्साहन मिला। साहित्य एवं शिक्षा को प्रश्रय देकर हर्ष ने गुप्तकालीन संस्कृति का नव जागरण प्रदान किया। उसके इन सारे कार्यों से भारतीय समाज को नया बल ~~दिया~~ मिला।